सन्तराम वत्स्य

सरल ज्ञान-विज्ञान माला

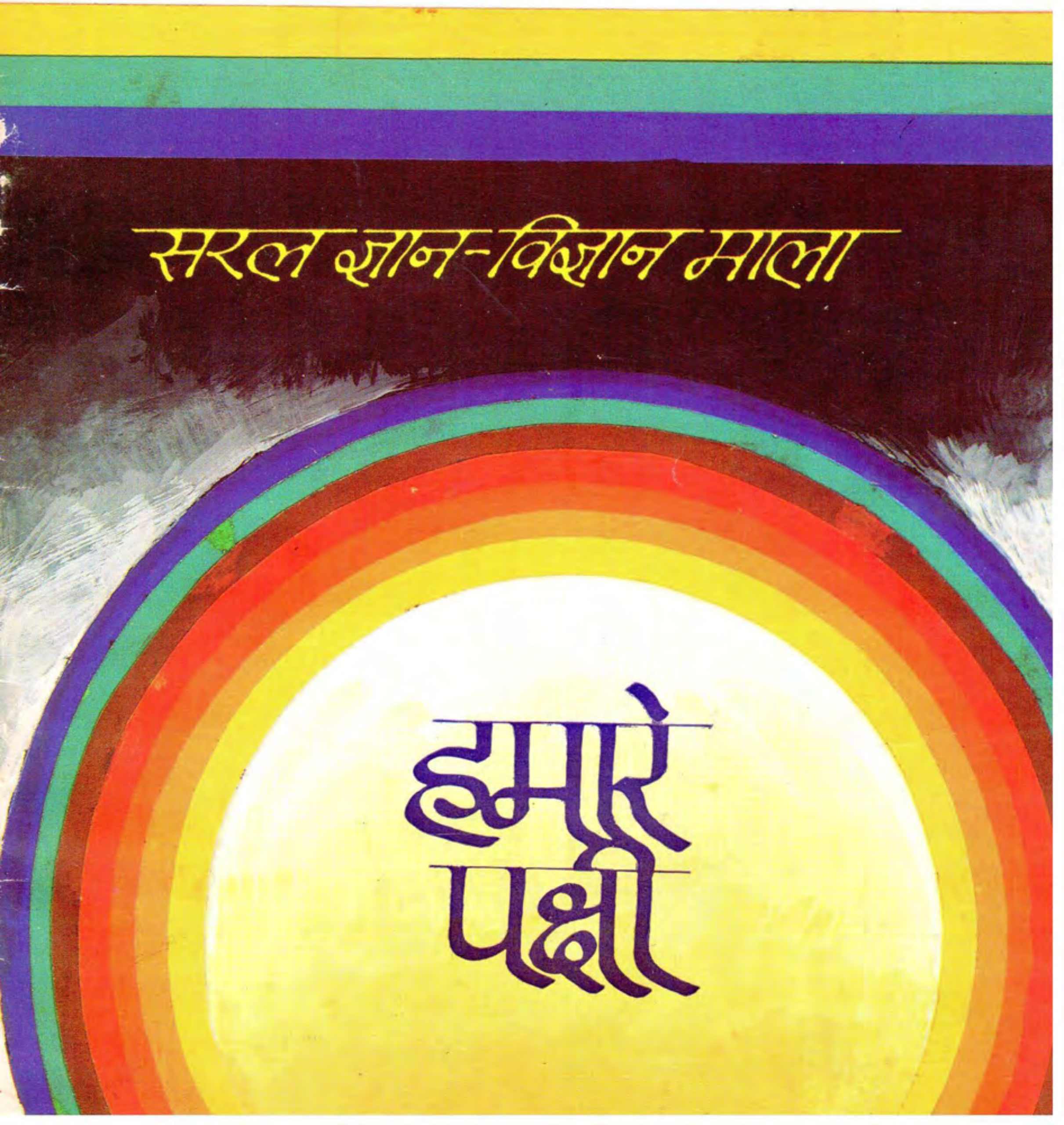

हमारे पक्षी

सरल ज्ञान-विज्ञान

हमारे पक्षी

सन्तराम वत्स्य

© प्रकाशक

प्रकाशक :

परमेश्वरी प्रकाशन
बी-109, प्रीत विहार, दिल्ली-110 092

प्रथम संस्करण :

1989

मूल्य :

आठ रुपये

चित्र सज्जा :

किशोर ओबराय, नई दिल्ली-110 027

मुद्रक :

विमल ऑफसैट
पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा
दिल्ली-110 032

HAMARE PAKSHI *(science feature book for children)*
By Santram Vatsya Price Rs. 8.00

हमारे पक्षी

तुम अपने घर में गौरैया को देखते हो।
कबूतरों की गुटरगूँ सुनते हो।
दीवार पर बैठा कौवा काँव-काँव करता है।
गौरैया, कबूतर और कौवा
ये सब पक्षी हैं।
पक्षी कई तरह के होते हैं।

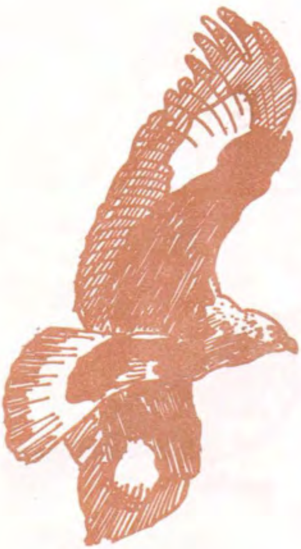

जिन प्राणियों के शरीर पर
पंख होते हैं :
उन्हें पक्षी कहते हैं।
पंख, पक्ष या पर एक ही बात है।
पक्षियों के पंख होते हैं।
पंखों से पक्षी आकाश में
उड़ते हैं।

पक्षियों के दो पैर होते हैं।
पैरों में उंगलियां होती हैं।
उंगलियों पर काँटे की तरह तीखे
नाख़ून होते हैं।
पक्षी के पैर को पंजा कहते हैं।
पक्षियों के हाथ नहीं होते।
हाथों का काम ये पंजों और
चोंच से करते हैं।

सभी पक्षियों के चोंच होती है ।
किसी की छोटी,
किसी की लम्बी,
किसी की चपटी,
किसी की आगे को मुड़ी हुई,
किसी की तीखी,
किसी की भौंथी ।
पक्षियों की चोंच उनके भोजन
को पकड़ने और खाने की
आवश्यकता के अनुसार बनी
होती है ।

पक्षियों के पंजे तरह-तरह के होते हैं।
पक्षी पंजों से काम लेते हैं।
जब डाल पर बैठते हैं तो डाल को पंजों से कसकर पकड़ते हैं।

बाज़ अपने तीखे, नोकदार पंजों से दूसरे पक्षियों, चूहों और छोटे जानवरों को झपटकर पकड़ लेता है, और उड़ जाता है।
जो पक्षी पानी में तैरते हैं, उनके पंजों की उंगलियां पतली चमड़ी की झिल्ली से आपस में जुड़ी हुई होती हैं। इससे उन्हें तैरने में सहायता मिलती है।
बतख़ का पंजा ऐसा ही होता है।

सभी पक्षियों के दो डैने होते हैं।
इन डैनों पर पंख उगे रहते हैं।
पंख दो तरह के होते हैं : नीचे छोटे रोएंदार और ऊपर लम्बे--बड़े-बड़े।
छोटे रोएंदार पंख पक्षियों के शरीर को गर्म रखते हैं, ठंड से बचाते हैं।
बड़े पंख उड़ने के काम आते हैं।
पानी में तैरने वाले पक्षियों के पंख चिकने होते हैं इसलिए पानी से गीले नहीं होते।

पंख पक्षियों के कपड़े हैं।
जैसे तुम रंग-बिरंगे कपड़े पहनते हो,
इसी तरह पक्षियों के पंख भी रंग-बिरंगे होते हैं।
कई पक्षियों के पंख साल में एक बार गिरकर
फिर नए निकल आते हैं।
कई पक्षियों का रंग, मौसम के अनुसार
थोड़ा बदल भी जाता है।
कई पक्षियों के बच्चों का रंग-रूप
बचपन में अपने माता-पिता की तरह नहीं होता।
जब बड़े हो जाते हैं, तब वैसा होता है।

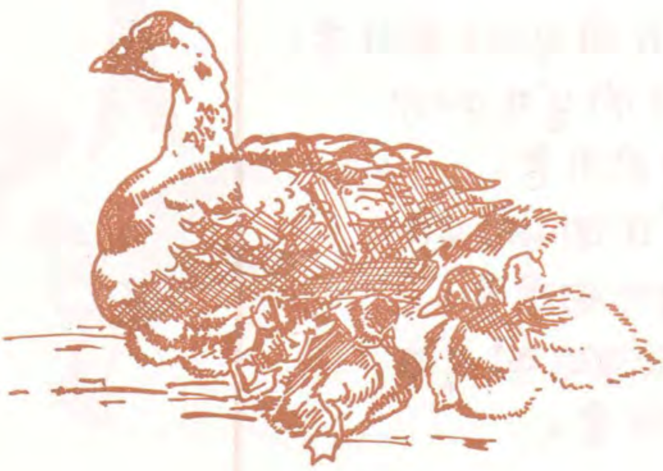

पक्षियों के पूँछ भी होती है।
पूँछ उड़ने में बहुत काम
आती है।
उड़ते समय शरीर को
सीधा रखने, घूमने, रुकने और
नीचे उतरने में पूँछ सहायक
होती है।
पक्षी जब डाल पर बैठते हैं
तो पूँछ शरीर को सीधा रखने
में सहायक होती है।
मोर अपनी पूँछ से ही सुन्दर
लगता है।
मुर्गे की पूँछ भी सुन्दर होती है।
कई पक्षियों की पूँछ पतली
और लम्बी होती है।
कुछ की पूँछ जापानी पंखे
की तरह खुल जाती है।
भृंगराज चिड़िया की पूँछ
दोफंकी होती है।

पक्षियों के दांत नहीं होते।
जब ये खाते हैं तो भोजन गले के नीचे जमा होता रहता है।
फिर जब कुछ गल जाता है तो मेदे में पहुंचता है।
पक्षियों के दो आंखें और दो कान होते हैं।
पक्षियों की आंखें हमारी तरह सामने न होकर दाएं-बाएं होती हैं।
इसलिए वे अपने दाएं-बाएं की चीज़ों को एक साथ देख सकते हैं।
सामने की चीज़ देखने के लिए पक्षी को अपना सिर घुमाना पड़ता है।
उल्लू सामने की चीज़ों को बिना सिर घुमाये देख सकता है, क्योंकि उसकी आंखें सामने होती हैं।

हर एक पक्षी के अंग : पर, चोंच, टांगें और पंजे
ऐसे बने होते हैं कि वह अपना भोजन प्राप्त कर सके।
क्या तुम बता सकते हो कि
सारस और बगुले की चोंच और टांगें
लम्बी क्यों होती हैं ?
इसलिए कि ये छिछले पानी में खड़े होकर
अपनी लम्बी चोंच से पानी में तैरती
मछलियों को पकड़ सकें।
इसी तरह शिकारी पक्षियों की चोंचें नुकीली और
पंजों के कांटे लम्बे होते हैं,
जिनसे वे शिकार को पकड़कर चोंच से नोचते हैं।
तोते की चोंच तुमने देखी ही होगी।
फलों को कुतरने के लिए वह बड़े
काम की है।

कई पक्षियों के नर और मादा का रूप-रंग
एक-जैसा नहीं होता ।
नर और मादा को जोड़ा भी कहते हैं ।
सभी पक्षी अण्डे देते हैं ।
अण्डे देने से पहले नर और मादा घर बनाते हैं ।
पक्षियों के घर को घोंसला कहते हैं।
बहुत से पक्षी अपना घोंसला वृक्षों पर बनाते हैं ।
गौरैया और कबूतर अपने घोंसले घरों में बनाते हैं।
तोते वृक्ष के खोखल में अण्डे देते हैं ।

कुछ पक्षी झाड़ियों या पत्थरों में धरती पर भी घोंसला बनाते हैं ।
कुछ पक्षी नदियों और खड्ड़ों के किनारे की रेतीली दीवारों को काटकर घोंसला बनाते हैं ।

घोंसला तिनकों, पत्तों, घास, परों और गीली मिट्टी से बनता है ।

कई पक्षी अपना घोंसला बड़ी कारीगरी से बनाते, हैं।

इनमें दर्जिन और बया का घोंसला प्रसिद्ध है।

दर्जिन पत्तों को सीकर घोंसला बनाती है।

यह घोंसला टहनी से लटकता रहता है।

बया का घोंसला भी टहनी से लकटता हुआ,

तुम्बी जैसा लगता है।

अबाबील का घोंसला प्याले के आकार का होता है।

क्या तुम भी चाहते हो कि पक्षियों की तरह आकाश में उड़ो ?

आकाश में उड़ने की चाह हमें पक्षियों से ही मिली है।

मनुष्य हवाई जहाज़ पर बैठकर आकाश में उड़ते हैं।

प्रकृति ने पक्षियों की रचना इस प्रकार की है कि वे उड़ सकें।

इसके लिए उन्हें पंख दे दिए हैं।

उनका शरीर बड़ा हल्का बनाया है।

पक्षियों की हड्डियाँ खोखली होती हैं।

इससे उनका भार हल्का रहता है।

हल्के भार से उड़ने में आसानी होती है।

कुछ पक्षी पालतू हो जाते हैं।
कुछ पक्षी सिखाने पर मनुष्य की
बोली बोलने लगते हैं।
तोता, मैना और बुलबुल ऐसे ही
पक्षी हैं।

कबूतर भी पालतू बन जाते हैं।
पालतू कबूतर दूत का काम भी
करते थे।

पालतू कबूतरों में उड़ने का
मुकाबला भी होता है।
तीतर, बटेर और चकोर भी
पाले जाते हैं।

शिकारा और बाज शिकारी पक्षी
हैं।
इन्हें सिधाकर इनसे दूसरे पक्षियों
का शिकार कराया जाता है।

पक्षी जंगलों, बाग़ों और खेतों में,
नदियों, झीलों और तालाबों के किनारे रहते हैं
नगरों में कौवे, कबूतर, मैना और गौरैया जैसे
पांच-छः तरह के पक्षी ही दिखते हैं।
वैसे भी सभी तरह के पक्षी किसी एक जगह
और किसी एक मौसम में दिखाई नहीं देते।
तुम यदि एक ही जगह बहुत से पक्षियों को
देखना चाहो तो चिड़ियाघर जाओ।
चिड़ियाघर में देश और विदेश के
रंग-बिरंगे, छोटे-बड़े, विचित्र रूप-रंग के पक्षी
जालीदार बड़े-बड़े कमरों में पाले जाते हैं।

सभी पक्षी उड़ते हैं : कोई कम, कोई अधिक ।
कुछ पक्षी बहुत ऊंचाई पर उड़ते हैं ।
बहुत से नीचे ही उड़ते हैं ।
कुछ पक्षी उड़ते भी हैं, तैरते भी हैं और
धरती पर चलते भी हैं ।
मोर अपनी भारी पूँछ के कारण ज्यादा उड़ नहीं पाता,
पर दौड़ खूब लेता है ।
गिद्ध बहुत ऊँचाई पर उड़ता है । बड़ा चमगादड़
रात को उड़ता है और दिन में टहनी से उलटा
लटका रहता है ।

यह बाग़ों पर हमला
करता है ।
बड़ा हानिकारक है ।
पर यह पक्षी नहीं,
पशु है ।

पक्षियों को मोटे रूप में पांच भागों में बांट सकते हैं :

1. इनमें से कुछ तो बस्तियों और बाग़ों में रहते हैं।

2. कुछ तालाबों और झीलों के पानी में रहते हैं।

3. कुछ ऐसे भी हैं जो पानी के किनारे रहते हैं।

4. कुछ पक्षी दूसरे पक्षियों और जानवरों को मारकर खाते हैं। ये शिकारी पक्षी हैं।

5. कुछ ऐसे हैं जिनका शिकार मनुष्य करते हैं और उनका मांस खाते हैं।

पक्षी हमारे लिये बहुत उपयोगी हैं।
ये खेतों को हानि पहुंचाने वाले कीड़ों को खाते हैं।
उल्लू चूहों को खा जाता है।
गिद्ध, चीलें और कौवे मरे पड़े जानवरों को खाकर सफाई का काम करते हैं।
कई पक्षियों का मांस और अण्डे खाने के काम आते हैं। कुछ पक्षी ऐसे भी हैं, जो खड़ी फसलों और फलों को हानि पहुंचाते हैं।
ऐसे पक्षियों में तोता प्रमुख है।

पक्षी एक ओर काम भी करते हैं :
ये जब फलों को खाते हैं,
तो उनके बीजों को निगल जाते हैं।
फिर जब ये लम्बी उड़ान भरकर
दूर के स्थानों में चले जाते हैं
तो खाये हुए बीज साबुत बीट में निकल जाते हैं।
ये बीज उगकर पौधे और वृक्ष बन जाते हैं।
इस तरह एक देश के बीजों को दूसरे देश में
पहुंचाने का काम ये करते हैं।

पक्षियों की कई बातें बड़ी विचित्र होती हैं।
जिन देशों में भयंकर जाड़ा पड़ता है,
धरती पर बर्फ़ की चादर बिछ जाती है,
ठंड के मारे जीना कठिन होता है,
वहां बेचारे पक्षी क्या खाएं और कहां रहें!
वहां के पक्षी कुछ महीनों के लिए
अपने देश को छोड़कर दूसरे देशों में चले जाते हैं।
ऐसे देशों में जहां कम ठंड पड़ती हो,
खाने-पीने की सुविधा हो।

पक्षियों की यह यात्रा हज़ारों मील की होती है।
कई-कई दिन वे उड़ते चले जाते हैं।
कुछ तो रास्ते में मर भी जाते हैं।
वे दिन-भर उड़ते ही रहते हैं।
रात को भोजन और आराम करते हैं।
आश्चर्य की बात है कि
वे प्रतिवर्ष एक ही मार्ग से जाते हैं।
कौन उन्हें यह सब बताता-समझाता है?
ये सब सहज बुद्धि के काम हैं।

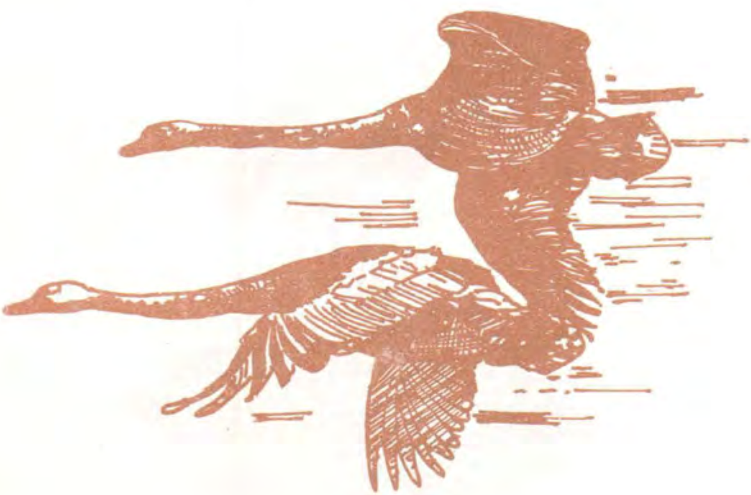

जब वे अच्छे जल-वायु वाले स्थान में पहुंच जाते हैं,
तो चैन की सांस लेते हैं।
दिन-भर कीड़े-मकोड़े, दाना-दुनका चुगकर
रात को घने वृक्षों पर बसेरा करते हैं।
फिर जाड़े का अन्त होने लगता है
तो वापस उड़कर अपने देश को चले जाते हैं
वहां नए घोंसले बनाते हैं।
अण्डे देते हैं और उन्हें सेते हैं।
अण्डों से बच्चे निकलते हैं। बच्चे बड़े होते हैं।
उड़ना सीखते हैं और पूरे पक्षी बन जाते हैं।
यही क्रम प्रतिवर्ष चलता है।

क्या तुमने कभी बाग में
कठफोड़वे को ठक-ठक आवाज़
करते सुना है ?
कठफोड़वा वृक्ष के तने पर
बैठकर छाल के ऊपर ज़ोर
से चोंच मारता है।
छाल के नीचे छिपे हुए कीड़े
इस ठक-ठक से डरकर
बाहर निकल आते हैं।
उनके बाहर निकलते ही
कठफोड़वा अपनी लम्बी
चोंच से उन्हें पकड़ लेता है।
और खा जाता है।

कोयल वसन्त ऋतु में कुहू-कुहू बोलती है।
बरसात में काले-काले बादल गरजते हैं,
बिजली चमकती है,
मोर नाचने-कूजने लगता है।
मोर हमारा राष्ट्रीय पक्षी है।
मुर्गा बांग लगाता है।
कबूतर गुटर-गूँ करते हैं।
छोटी चिड़ियां चहकती हैं।
बतखें कें-कें करती हैं।

पक्षियों का पांत बनाकर आकाश में उड़ना
बड़ा भला लगता है।
जब उड़ते हुए पक्षी
तरह-तरह की पांत का रूप बनाते हैं।
तो देखने वाले दंग रह जाते हैं।

अब तुम जंगल या बाग में तरह-तरह के पक्षियों को देखो।

खोजने पर वहां उनके घोंसले मिल जायेंगे।

कौन-सा पक्षी क्या खाता है, इसका पता लगाओ।

पर कभी भी पक्षियों के घोंसलों, अण्डों या बच्चों से हाथ मत लगाना।

पक्षियों के पास जाना हो तो चुपचाप जाओ, बिना शोर के, बिना भाग-दौड़ के उनके पास जाओगे तो उनको भली भांति देख पाओगे। कोयल का गाना, मोर का नाचना, बगुले का झपटकर मछली को पकड़ना, सुनना और देखना चाहो तो शांति से जाओ। मित्र की तरह जाओ, शत्रु की तरह नहीं। कौवे, कबूतर, मैना और गौरैया को तो आंगन में दाना डाल-कर चुगते देख सकते हो।